पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रस्तावना

शास्त्र के कुछ अंश हमें प्रेरित भी करते हैं और हमें विनम्र भी बनाते हैं—जहाँ हम उन लोगों के दुखद पतन को देखते हैं जो कभी परमेश्वर के हृदय के निकट थे।
इसमें हमें एक महत्वपूर्ण बाइबिल सत्य का सामना होता है:

पाप केवल एक कार्य नहीं है—यह एक शक्ति है, एक दबाव है जो यदि अनियंत्रित छोड़ दिया जाए तो बढ़ता जाता है।

“क्योंकि पाप ने आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझे धोखा दिया, और आज्ञा के द्वारा मुझे मृत्यु के लिए ले गया।”
— रोमियों 7:11 (NIV)

पाप केवल हमें गलत करने के लिए प्रलोभित नहीं करता। यह धोखा देता है, नियंत्रित करता है, दबाव डालता है, और अंततः मृत्यु की ओर ले जाता है—आध्यात्मिक, भावनात्मक और कभी-कभी भौतिक रूप से भी।

आइए हम दो प्रमुख उदाहरणों पर ध्यान दें: राजा दाऊद और यहूदा इस्करियोत—दोनों को अभिषिक्त किया गया, दोनों परमेश्वर के कार्य के निकट, और दोनों पाप के दबाव में त्रस्त हुए।

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1. दाऊद: वह राजा जो गिर गया

दाऊद को “परमेश्वर के हृदय के अनुसार व्यक्ति” कहा गया है (1 शमूएल 13:14)। वह परमेश्वर की आवाज़ से अपरिचित नहीं था। उसने युद्ध जीते, भजन लिखे, और विनम्रता से नेतृत्व किया।

लेकिन दाऊद भी पाप के दबाव से अछूता नहीं था।

उसकी पतन की शुरुआत हुई एक नज़र से—उसने बथशेबा को स्नान करते देखा (2 शमूएल 11:2)। वह नज़र इच्छा में बदल गई, और इच्छा व्यभिचार की ओर ले गई। जब बथशेबा गर्भवती हुई, दाऊद ने अपने पाप को छुपाने की योजना बनाई, उसका पति उरिय्याह को युद्ध से बुलाकर सोने की उम्मीद की, लेकिन उरिय्याह की निष्ठा दाऊद के छल से मजबूत थी:

“सिविल और इज़राइल और यहूदा तम्बू में हैं… मैं अपने घर जाकर
खाने, पीने और अपनी पत्नी के साथ रहने कैसे जाऊँ? जिस प्रकार तुम जीवित हो, मैं ऐसा नहीं करूँगा!”
— 2 शमूएल 11:11

जब यह योजना असफल हुई, दाऊद ने उरिय्याह को युद्धक्षेत्र में मार डाला

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

(2 शमूएल 11:15)।
जिसने कभी परमेश्वर की अभिषिक्तता के कारण शाऊल की जान बख्शी थी, वही अब अपने अपराध को छुपाने के लिए एक निष्ठावान सेवक को मार बैठा।

दाऊद की कहानी यह दिखाती है कि अनियंत्रित पाप कैसे बढ़ता है।

“हर एक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा द्वारा खींचा और बहकाया जाता है।
फिर अभिलाषा ने गर्भ धारण किया, और जब वह पूर्ण हुआ तो पाप को जन्म दिया; और पाप जब पूर्ण रूप से बढ़ा तो मृत्यु को जन्म देता है।”
— याकूब 1:14–15 (NIV)

हालांकि दाऊद ने गहरी प्रायश्चित की (भजन 51), उसके कर्मों के परिणाम उसके पीछे रहे। उसकी कहानी हमें याद दिलाती है:

“पाप चुपचाप बढ़ता है लेकिन जोरदार चोट देता है।”

2. यहूदा: वह शिष्य जिसने विश्वासघात किया

यहूदा इस्करियोत का पतन धीरे-धीरे शुरू हुआ।

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

“उसने यह नहीं कहा क्योंकि वह गरीबों की परवाह करता था, बल्कि
क्योंकि वह चोर था; पैसे की थैली का रखवाला होने के नाते, वह उसमें
रखी वस्तुएँ स्वयं ले लेता था।”
— यूहन्ना 12:6 (NIV)

धन का प्रेम बड़ी बुराई का द्वार खोलता है। छोटी-छोटी चोरी के बाद, यहूदा ने यीशु का विश्वासघात कर दिया—तीस चाँदी के सिक्कों के लिए (मत्ती 26:14–16)।

फिर भी, यह विश्वासघात न तो घृणा से हुआ और न ही द्वेष से—बल्कि अनदेखा किया गया पाप इसका परिणाम था। कार्य के बाद, यहूदा पछताया:

“जब यहूदा, जिसने उसे धोखा दिया था, देखा कि यीशु की सज़ा हुई है,
तो उसे पछतावा हुआ…”
— मत्ती 27:3 (NIV)

पाप ने उसे ऐसी जगह पहुँचा दिया जहाँ वह कभी नहीं जाना चाहता था। लेकिन पतरस की तरह प्रायश्चित करने के बजाय, वह अपराध के बोझ तले कुचला गया और स्वयं अपने जीवन का अंत कर लिया।

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

पाप के दबाव का सिद्धांत

बाइबल पाप को केवल नैतिक गलती नहीं मानती—यह एक आध्यात्मिक शक्ति है।

“सत्यमुच मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई पाप करता है वह पाप का दास
है।”
— यूहन्ना 8:34 (NIV)

पौलुस इसे एक मालिक के रूप में देखते हैं जो हमें बंधक बनाता है (रोमियों 6:12–14)।

इसलिए पाप का प्रबंधन नहीं किया जा सकता—इसे स्वीकार करना, प्रायश्चित करना और क्रूस पर चढ़ाना अनिवार्य है। छोटे पाप भी महत्वपूर्ण हैं; वे बीज की तरह बढ़ते हैं, और पूर्ण होने पर उनके परिणाम अकल्पनीय होते हैं।

आधुनिक उदाहरण: दबाव आज भी वास्तविक है

आज भी पाप का दबाव विनाशकारी है। लोग अस्थायी लाभ के लिए अपनी ईमानदारी त्यागते हैं। अन्य लोग रिश्ते, प्रतिष्ठा, और जीवन तक नष्ट

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

करते हैं।

युवा महिलाएँ, शर्म के डर से, गर्भपात करती हैं—अक्सर यह बुराई से नहीं बल्कि सामाजिक निर्णय, अस्वीकृति और भय के दबाव के कारण होता है।
लोग कार्यस्थलों से चोरी करते हैं, इसे “छोटा” समझकर, और बाद में भ्रष्टाचार में फंस जाते हैं।
यहां तक कि विश्वासियों को भी गंभीर पाप में फंसना पड़ता है—क्योंकि उन्होंने पाप की पकड़ को कम आंक लिया।

परमेश्वर की पुकार: भागो, स्वीकारो और मुक्त हो जाओ

दाऊद अंततः कड़वी आँसुओं के साथ प्रायश्चित किया (भजन 51)। और हालांकि उसका रास्ता निशान भरा था, परमेश्वर ने उसे माफ किया।

दूसरी ओर, यहूदा ने निराशा में आत्मसमर्पण कर दिया। यह अंतर हमें सुसमाचार का हृदय दिखाता है:

“यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें, वह विश्वासयोग्य और न्यायशील
है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सारी अधर्मिता से शुद्ध करेगा।”
— 1 यूहन्ना 1:9 (NIV)

पाप का छुपा हुआ दबाव

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

सुखद समाचार यह है कि कोई भी उद्धार से बाहर नहीं है, लेकिन हमें इंतजार नहीं करना चाहिए जब तक पाप हमें पूरी तरह से न निगल ले।

अंतिम प्रेरणा

पाप के साथ खेलना मत, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न लगे। चाहे वासना हो, लालच, बेईमानी या घमंड—पाप दबाव डालता है, और वह दबाव बंधन की ओर ले जाता है।

“यदि तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हें पाप करने के लिए उकसाए, तो उसे निकाल फेंको। यह तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम्हारा एक अंग नाश हो, बजाय इसके कि सारा शरीर नरक में जाए।”
— मत्ती 5:29 (NIV)

आइए हम पाप के खतरे को गंभीरता से लें और मसीह की कृपा को पूरी तरह अपनाएँ, जो न केवल क्षमा देने आए, बल्कि मुक्त करने के लिए भी आए।

शलोम।

Share on:
WhatsApp

Print this post